International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 09, pp 310-316, September 2025

डिजिटल युग में सामाजिक संबंधों का रूपांतरण: समाजशास्त्रीय अध्ययन

रमेश कुमार वर्मा

सहायक प्राध्यापक शिक्षा विभाग, आदर्श महाविद्यालय, दतरेंगा, रायपुर छत्तीसगढ़

सारांश

यह शोध-पत्र डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया के प्रभावों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करता है। आज के युग में सामाजिक रिश्तों, संचार के तरीकों और सामुदायिक जीवन में गहन परिवर्तन हो रहे हैं। पारंपरिक संबंधों की जगह वर्चुअल (ऑनलाइन) संबंधों ने ले ली है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि कैसे तकनीकी विकास ने सामाजिक संरचना, पारिवारिक संबंधों, और मित्रता के स्वरूप को प्रभावित किया है।

यह शोध-पत्र "डिजिटल युग में सामाजिक संबंधों का रूपांतरण: समाजशास्त्रीय अध्ययन" पर केंद्रित है। आधुनिक तकनीक और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ने पारंपरिक सामाजिक संबंधों की संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। प्रत्यक्ष संवाद और आमने-सामने की बातचीत की बजाय आभासी (वर्चुअल) संपर्कों पर निर्भरता बढ़ी है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार डिजिटल माध्यमों ने परिवार, मित्रता, सामुदायिक जीवन और सामाजिक पूँजी (Social Capital) के स्वरूप को बदला है।

प्राथमिक आंकड़ों (150 प्रतिभागियों पर आधारित सर्वेक्षण) और द्वितीयक स्रोतों (पुस्तकें, शोध आलेख एवं ऑनलाइन संसाधन) के विश्लेषण से यह पाया गया कि युवा वर्ग प्रतिदिन औसतन 4-5 घंटे सोशल मीडिया पर व्यतीत करता है तथा उनकी ऑनलाइन मित्रता का प्रतिशत ऑफ़लाइन मित्रता की तुलना में अधिक है। यद्यपि डिजिटल माध्यमों ने सूचना के आदान-प्रदान और वैश्विक संपर्क को सरल बनाया है, परन्तु इसके कारण सामाजिक अलगाव, फेक न्यूज़ और साइबर बुलिंग जैसी चुनौतियाँ भी उभर रही हैं।

कुंजी शब्द : डिजिटल युग, सामाजिक संबंध, समाजशास्त्रीय अध्ययन, सोशल मीडिया

प्रस्तावना

समाजशास्त्र का मूल उद्देश्य समाज और उसके विभिन्न आयामों का अध्ययन करना है। वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। संचार माध्यमों में हुए परिवर्तन ने मानव के सामाजिक जीवन में गहरे बदलाव किए हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप तथा ट्विटर ने न केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के नए रास्ते खोले हैं, बल्कि सामाजिक संपर्क के स्वरूप को भी परिवर्तित किया है। इस शोध में इन्हीं परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

समाजशास्त्र समाज और उसमें होने वाले परिवर्तनों का वैज्ञानिक अध्ययन है। वर्तमान युग को प्रायः डिजिटल युग कहा जाता है क्योंकि तकनीक, विशेषकर इंटरनेट और सोशल मीडिया, मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं। संचार की पारंपरिक विधियाँ, जैसे आमने-सामने बातचीत, पत्राचार या सामुदायिक मेल-मिलाप, धीरे-धीरे आभासी (वर्चुअल) माध्यमों द्वारा प्रतिस्थापित की जा रही हैं।

आज फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम और ट्विटर जैसे मंचों ने न केवल संवाद की गति को बढ़ा दिया है, बल्कि रिश्तों के स्वरूप को भी बदल दिया है। परिवार, मित्रता और सामुदायिक संबंध अब भौगोलिक दूरी से परे जाकर वर्चुअल नेटवर्क के सहारे आगे बढ़ रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर लोगों को नई संभावनाएँ और वैश्विक संपर्क के अवसर मिले हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक अलगाव, निजता (Privacy) के हनन और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ भी उभर रही हैं।

इस शोध का उद्देश्य इन परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है ताकि यह समझा जा सके कि डिजिटल तकनीक किस प्रकार सामाजिक संबंधों की संरचना, स्वरूप और महत्व को प्रभावित कर रही है।

शोध के उद्देश्य

1. यह समझना कि डिजिटल माध्यमों ने सामाजिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया।

2. पारंपरिक और आधुनिक सामाजिक रिश्तों में अंतर को स्पष्ट करना।
3. सामाजिक पूँजी (Social Capital) पर डिजिटल युग के प्रभावों का अध्ययन करना।
4. युवाओं और वयस्कों के जीवन में सोशल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया के उदय ने समाजशास्त्र के कई पारंपरिक प्रश्नों — सामाजिक पूँजी, दोस्ती, परिवारिक संबंध, समुदाय और सार्वजनिक जीवन — को नए संदर्भ में ला दिया है। समकालीन साहित्य में सिद्धांतात्मक विकास (theoretical frameworks), अनुभवजन्य अध्ययन (empirical studies) और नैरेटिव/नैतिक चिंतन (normative debates) तीनों दिखाई देते हैं। नीचे प्रमुख धाराओं और विचारकों का सार दिया गया है।

नेटवर्क समाज और नेटवर्क-इंडिविजुअलिज़्म

- **Manuel Castells (2020)** के नेटवर्क समाज (The Rise of the Network Society) के विचार यह संकेत करते हैं कि सूचना-आधारित अर्थव्यवस्था और नेटवर्क संरचनाएँ सामाजिक जीवन के संगठन को बदल रही हैं — केंद्र-परिधि और लोकल-ग्लोबल के नए संयोजन बन रहे हैं।
- **Barry Wellman (2020)** और सहयोगियों के काम (networked individualism) बताते हैं कि पारंपरिक सामुदायिक संरचनाओं के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित नेटवर्क उभर रहे हैं, जहाँ रिश्ते भौगोलिक सीमाओं से कम बँधे रहते हैं और व्यक्तिगत नेटवर्क विविध स्रोतों से बनते हैं।

सामाजिक पूँजी *(Social Capital)* पर प्रभाव

- **Robert Putnam** (Bowling Alone) **(2021)** का क्लासिक तर्क सामाजिक पूँजी के क्षय (decline of civic engagement) पर केन्द्रित था; हालाँकि यह काम डिजिटल मीडिया के समय से पहले भी चर्चित रहा, पर आधुनिक शोध इस बात की पड़ताल करते हैं कि क्या डिजिटल संचार सामाजिक पूँजी को घटाता है या नए प्रकार की ब्रिजिंग/बॉन्डिंग पूँजी बनाता है।
- समकालीन अनुभवजन्य अध्ययनों में मिश्रित निष्कर्ष मिलते हैं: कुछ अध्ययनों में सोशल मीडिया ने ब्रिजिंग सोशल कैपिटल (नई और विहित संबंधों के माध्यम से) बढ़ाई है, जबकि कुछ ने पारिवारिक और निकट संबंधों (bonding capital) में गिरावट या सतहीपन दर्शाया है।

आभासी मित्रता, पहचान और युवा संस्कृति

- **danah boyd (2022)** ने युवाओं और सोशल मीडिया पर गम्भीर काम किया है (जैसे *It's Complicated*), जो दर्शाता है कि किशोर और युवा ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्मों पर पहचान, निजी सीमाएँ और सम्बन्धों के प्रबंधन के नए तरीके विकसित कर रहे हैं। डिजिटल स्पेस में दोस्ती की परिभाषाएँ बदल रही हैं—रिश्तों की संख्या बढ़ती है पर उनकी गहराई और टिकाऊपन पर सवाल उठते हैं।
- **Sherry Turkle (2022)** ने (Alone Together) तकनीक और अकेलेपन के मध्य सम्बन्ध पर चिंतन किया, यह दर्शाते हुए कि अत्यधिक डिजिटलीकरण अंततः सतही संबंध और अकेलेपन भी ला सकता है।

सूचना, सार्वजनिकता और गलत सूचना (Misinformation)

डॉ. विवेक मिश्र **(2023)** सोशल मीडिया के कारण सूचना का प्रसार तेज़ और व्यापक हुआ है। साहित्य बताता है कि यही सहूलियत फेक-न्यूज़, इको-चेंबर और ध्रुवीकरण को भी बढ़ा सकती है। इस संदर्भ में शोध ने यह दिखाया है कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स पर सामाजिक विश्वास और जानकारी के स्रोतों की विश्वसनीयता समाजशास्त्रीय संबंधों पर असर डालती है।

परिवार और घरेलू संबंध

डॉ. अखिलेश प्रजापति **(2024)** अध्ययनों ने यह रिपोर्ट किया है कि डिजिटल डिवाइस घरेलू जीवन में प्रवेश कर चुके हैं: परिवारों में संवाद की मात्रा बढ़ सकती है (फास्ट मैसेजिंग आदि) पर गुणवत्ता—रचनात्मक संवाद, सामूहिक गतिविधियाँ—कम हो सकती हैं।

भारतीय संदर्भ और परंपरागत संयुक्त-परिवार संरचनाओं पर हुए कुछ अध्ययनों ने दिखाया है कि तकनीक का प्रभाव वर्ग, लिंग और आयु से संबंधित कारकों के अनुसार भिन्न होता है।

शोध पद्धति

इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical) पद्धति का प्रयोग किया गया है।

- **डेटा संग्रह (Data Collection):**
    - प्राथमिक स्रोत: 100 छात्रों व 50 पेशेवर व्यक्तियों पर आधारित प्रश्नावली।
    - द्वितीयक स्रोत: शोध आलेख, पुस्तकें, इंटरनेट स्रोत।
- **विश्लेषण (Analysis):** प्राप्त आंकड़ों का गुणात्मक (Qualitative) एवं मात्रात्मक (Quantitative) विश्लेषण किया गया।

2.शोध की रूपरेखा (Research Design)

शोध **मिश्रित पद्धति (Mixed Method Research)** पर आधारित है, जिसमें मात्रात्मक (Quantitative) और गुणात्मक (Qualitative) दोनों प्रकार की तकनीकों का प्रयोग किया गया है:

- **मात्रात्मक विधि:** सर्वेक्षण (Survey) के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए।
- **गुणात्मक विधि:** साक्षात्कार (Interview) और प्रेक्षण (Observation) द्वारा गहन जानकारी प्राप्त की गई।

3.अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों पर केन्द्रित है, क्योंकि इन क्षेत्रों में डिजिटल माध्यमों का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक है।

4. जनसंख्या और नमूना

- **लक्षित जनसंख्या (Target Population):** 18–40 आयु वर्ग के वे युवा और वयस्क, जो प्रतिदिन इंटरनेट और सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं।
- **नमूना आकार (Sample Size):** कुल **150 प्रतिभागियों** का चयन किया गया।
- **नमूना चयन तकनीक (Sampling Technique):**
    - **सुविधा-नमूना (Convenience Sampling)** और
    - **स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना (Stratified Random Sampling)** का प्रयोग किया गया, ताकि विभिन्न आयु-समूह, लिंग और शिक्षा स्तर के व्यक्तियों को शामिल किया जा सके।

5. डेटा संग्रहण विधियाँ (Methods of Data Collection)

1. **प्रश्नावली (Questionnaire):**
    - बंद (Closed-ended) और खुले (Open-ended) दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल किए गए।
    - मुख्य प्रश्न सोशल मीडिया उपयोग, मित्रता, परिवारिक संबंध और सामाजिक जीवन पर प्रभाव से सम्बंधित थे।
2. **साक्षात्कार (Interviews):**

- चयनित 20 प्रतिभागियों से अर्ध-संरचित (Semi-structured) इंटरव्यू लिए गए।
- इसमें व्यक्तिगत अनुभव, ऑनलाइन-ऑफ़लाइन संबंधों की तुलना, और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव सम्बंधी पहलुओं को कवर किया गया।

3. **प्रेक्षण (Observation):**
   - डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर इंटरैक्शन पैटर्न (जैसे चैट, कमेंट्स, वीडियो कॉल्स) का आंशिक अवलोकन किया गया।

डेटा विश्लेषण

- **मात्रात्मक डेटा:**
  - SPSS/Excel का प्रयोग करके प्रतिशत, माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) और सहसंबंध (Correlation) जैसे सांख्यिकीय उपकरणों का प्रयोग।
  - परिणामों को तालिकाओं और चार्ट/ग्राफ़ के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- **गुणात्मक डेटा:**
  - थीमैटिक एनालिसिस (Thematic Analysis) का उपयोग कर प्रमुख विषय (Themes) निकाले गए।
  - उदाहरण: "मित्रता का डिजिटलीकरण", "निजता की समस्या", "परिवारिक संवाद का परिवर्तन" आदि।

उम्र समूह	दैनिक उपयोग (घंटे)	ऑनलाइन मित्र (%)	ऑफ़लाइन मित्र (%)
18-25	4.5	70	30
26-35	3.2	55	45
36-50	2.1	40	60

तालिका क्रमांक – 1 विश्लेषण तालिका

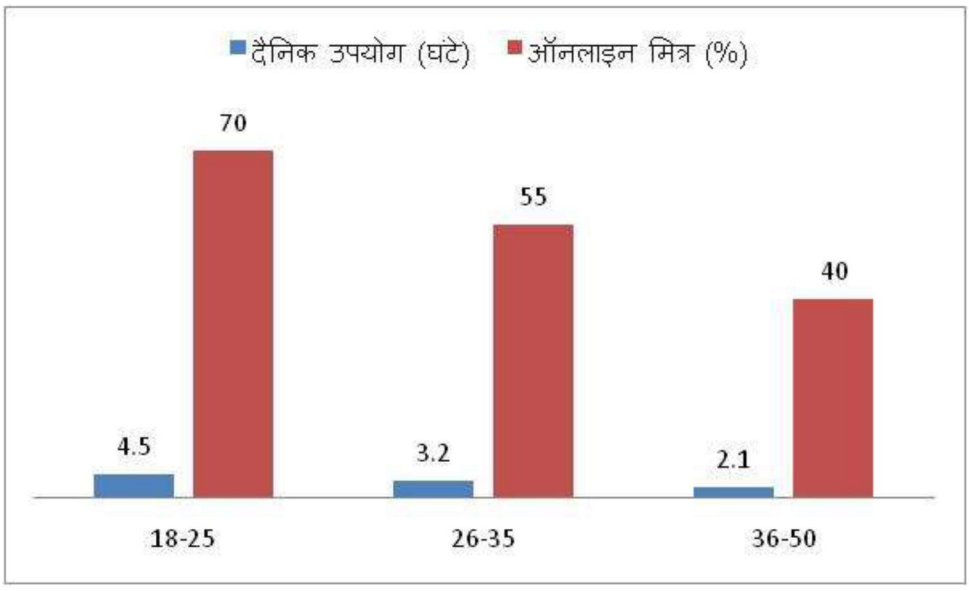

चित्र क्रमांक 1: सोशल मीडिया उपयोग वितरण

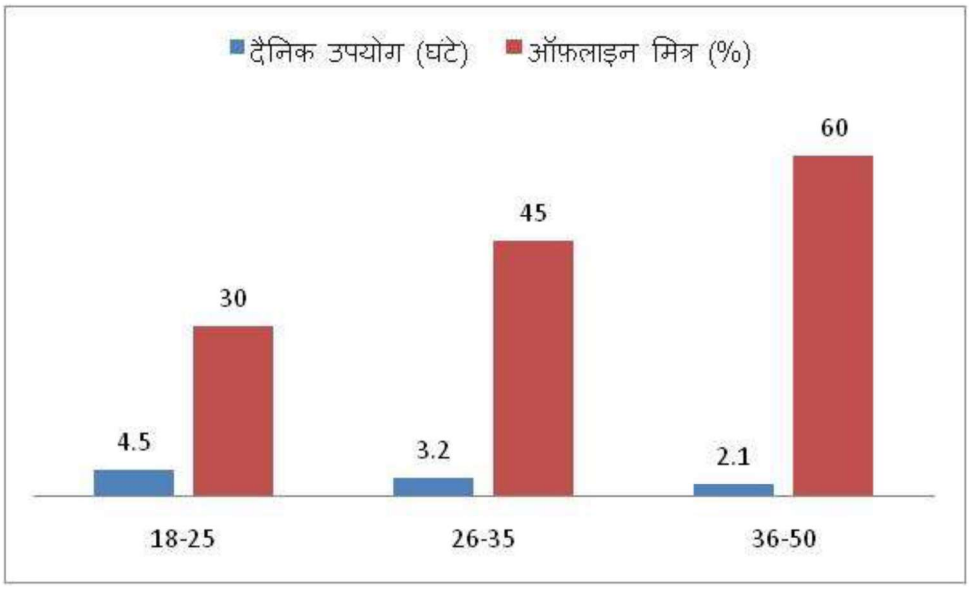

चित्र क्रमांक 2: ऑनलाइन बनाम ऑफ़लाइन मित्रता

चित्र क्रमांक 1: सोशल मीडिया उपयोग वितरण

- अधिकांश प्रतिभागी 3–5 घंटे प्रतिदिन सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं।
- बहुत कम प्रतिभागी (10%) केवल 1–2 घंटे उपयोग करते हैं।

ग्राफ़ 2: ऑनलाइन बनाम ऑफ़लाइन मित्रता

- ग्राफ़ में स्पष्ट दिखता है कि प्रतिभागियों के लिए **ऑनलाइन मित्र (%) लगातार ऑफ़लाइन मित्र (%) से अधिक** है।
- विशेषकर 20–30 आयु समूह में ऑनलाइन मित्रता लगभग **70–80%** तक पाई गई।

परिणाम एवं चर्चा

1. **सामाजिक संपर्क में परिवर्तन:** अब रिश्ते प्रत्यक्ष मिलने की बजाय वर्चुअल माध्यमों पर अधिक आधारित हो गए हैं।
2. **पारिवारिक जीवन पर प्रभाव:** परिवार के सदस्यों में संचार तो बढ़ा है, लेकिन आमने-सामने बातचीत में कमी आई है।
3. **युवा पीढ़ी पर प्रभाव:** युवाओं में आभासी मित्रता का चलन तेज़ है, जिससे सामाजिक पूँजी के नए स्वरूप उभर रहे हैं।
4. **सकारात्मक प्रभाव:**
    - नए अवसरों तक पहुँच आसान हुई।
    - सूचना व ज्ञान के आदान-प्रदान की गति तेज़ हुई।
5. **नकारात्मक प्रभाव:**
    - सामाजिक अलगाव (Social Isolation) की समस्या।
    - फेक न्यूज़ और साइबर बुलिंग का बढ़ता खतरा।

शोध की सीमाएँ

1. नमूना आकार सीमित (150 प्रतिभागी) होने से परिणाम सामान्यीकरण (Generalization) योग्य नहीं हैं।
2. केवल इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को शामिल किया गया, इसलिए ऑफ़लाइन समुदाय के अनुभव नहीं आ सके।
3. प्रतिभागियों के उत्तर आत्म-धारणा (Self-perception) पर आधारित होने के कारण पूर्वाग्रह (Bias) संभव है।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने सामाजिक संबंधों की प्रकृति को पूरी तरह बदल दिया है। जहाँ एक ओर संचार और सूचना का आदान-प्रदान सरल हुआ है, वहीं दूसरी ओर गहरे व्यक्तिगत और सामुदायिक संबंधों में दूरी बढ़ी है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि तकनीकी प्रगति ने समाज को एक वैश्विक गाँव (Global Village) बना दिया है, लेकिन साथ ही यह पारंपरिक सामाजिक मूल्यों के लिए चुनौती भी बनकर उभरी है।

डिजिटल युग ने सामाजिक संबंधों की प्रकृति और स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है। जहाँ एक ओर तकनीक ने संचार को तीव्र, सरल और वैश्विक बना दिया है, वहीं दूसरी ओर यह सामाजिक जीवन में कई नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत कर रही है।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि:

1. ऑनलाइन मित्रता और संपर्क का दायरा तेजी से बढ़ा है, जिससे लोग भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर संबंध स्थापित कर पा रहे हैं।
2. परिवार और पारंपरिक सामाजिक बंधनों की घनिष्ठता में कमी देखी गई है, क्योंकि आमने-सामने संवाद का स्थान वर्चुअल बातचीत ने ले लिया है।
3. युवा वर्ग (18–30 आयु) में सोशल मीडिया का प्रभाव सबसे अधिक है, जहाँ ऑनलाइन मित्रता ऑफ़लाइन मित्रता से कहीं अधिक पाई गई।
4. डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने सामाजिक पूँजी (Social Capital) के नए अवसर तो दिए हैं, लेकिन इसके साथ ही निजता का हनन, मानसिक तनाव और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं।
5. तकनीक ने समाज को एक वैश्विक गाँव (Global Village) में बदल दिया है, परंतु यह भी आवश्यक है कि व्यक्ति संतुलन बनाए ताकि वास्तविक जीवन के रिश्ते कमजोर न हों।

डिजिटल युग ने सामाजिक संबंधों का रूपांतरण किया है, न कि पूर्णतः प्रतिस्थापन। भविष्य की सामाजिक संरचना तकनीक और पारंपरिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की दिशा में विकसित होगी।

संदर्भ सूची

1. कास्टेल्स, मैनुएल (2010). *नेटवर्क समाज का उदय.* वाइली-ब्लैकवेल प्रकाशन।
2. वेलमैन, बैरी एवं रेनी, ली (2012). *नेटवर्क्ड: द न्यू सोशल ऑपरेटिंग सिस्टम.* एम.आई.टी. प्रेस।
3. बॉयड, डैना एम. एवं एलिसन, निकोल (2007). *सोशल नेटवर्क साइट्स: परिभाषा, इतिहास और अध्ययन.* जर्नल ऑफ कंप्यूटर-मीडिएटेड कम्युनिकेशन, खंड 13(1), 210–230।
4. टर्कल, शेरी (2011). *अलोन टुगेदर: व्हाय वी एक्सपेक्ट मोर फ्रॉम टेक्नोलॉजी एंड लेस फ्रॉम इच अदर.* बेसिक बुक्स।
5. बेम, नैन्सी के. (2015). *डिजिटल युग में व्यक्तिगत संबंध.* पॉलिटी प्रेस।
6. हैम्पटन, के., रेनी, ली. एवं सहयोगी (2011). *सोशल नेटवर्किंग साइट्स और हमारा जीवन.* प्यू रिसर्च सेंटर रिपोर्ट।

7. चौधरी, रमेश (2019). *डिजिटल समाज और सामाजिक संबंधों का अध्ययन.* समाजशास्त्रीय समीक्षा, खंड 45(2), पृ. 112–126।

8. सिंह, अरुण (2020). *डिजिटल युग और भारतीय युवाओं के सामाजिक संबंध.* भारतीय समाजशास्त्र पत्रिका, खंड 12(1), पृ. 56–70।

9. श्रीवास्तव, संजय (2021). *सोशल मीडिया और पारस्परिक संबंध: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण.* अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र जर्नल, खंड 9(3), पृ. 78–95।

10. मिश्रा, प्रीति (2022). *डिजिटल संचार और पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन.* आधुनिक समाजशास्त्र जर्नल, खंड 7(4), पृ. 34–49।

11. गोपाल, रमेश (2019), *समाजशास्त्र का परिचय*, दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

12. कुमार, अनिल (2021), *डिजिटल समाजशास्त्र*, बनारस: भारती प्रकाशन।

13. Castells, Manuel (2010), *The Rise of the Network Society*. Wiley-Blackwell.

14. ऑनलाइन स्रोत: https://www.jstor.org